श्रम विभाग श्रादेश

दिनांक, 9 नवम्बर, 1983

सं मो.बि./भिवानी/54-83/58640.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० कार्यकारी अभियन्ता सब अर्बन डिविजन हरियाणा राज्य विजली बोर्ड भिवानी, के श्रमिक श्री हेम करण तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वोछनीय समझते हैं 👸

इसलिए, ग्रव, श्रीचोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो.(ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिन्यम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोह्तक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिल ये श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:--

नया श्री हेम करण की सेवाओं का सनापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो नह किस राहत का हकदार है ?

• सं. ग्रो.वि./हिसार/56-83/58654.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० कार्यकारी मिभयन्ता रोडी लाईनिंग मण्डल 5 नलकूप विभाग सिरसा के श्रमिक श्री गुरनाम सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, मब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना 'सं 9641-1-श्रूम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रधिसूचना सं 3864-ए.एस.ग्रो. (ई) श्रम-70/13643, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री गुरनाम सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रोक्षवः/।श्रिवनी/48-83/58660. — चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ० दी भिवानी सेंद्रल कोपरेटिव कन्जू पर स्टोर लि॰ भिवानी के श्रीमक श्री करण सिंदु तया उसके प्रवन्थकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अंब, भौद्योगिक विवाद अधिनियन, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ. (ई) श्रम-70/13648, दिगांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को निवादग्रस्त या उत्तसे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिण्ड करते हैं जो कि उक्त प्रवत्व को तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री करण सिंह की सेवाओं का सामापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?"

सं. ग्रो.वि./हिसार/36-83/58667.→-चूंकि हरियाणा के राज्यंगल की राय है कि में. हरियाणा राज्य लबु सिचाई नलक्ष निगन चण्डीगढ़ (2) हरियाणा राज्य लबु तिबाई नजकून निगम डि० नं० 4 फटहाबाद के श्रीमक श्रोकाला राम तथा उत्तरे प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रमं/70/32573, दिनांक . 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी स्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.स्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त स्रिधिनियम की घारा 7 के स्रधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री काला राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो वि /हिसार/69-83/58674.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं राज्यपरिवहन नियंत्रक हरियाणा चण्डीगढ़ (2). जनरल मैनेजर हरियाणा रोडवेज हिसार के श्रीमक श्री राम कला तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यजाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं० 3864-ए.एस.श्रो.(ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1980 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित बीचे लिखा मामला न्यायनिणय हेतु निर्विष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री राम केला की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि /हिसार/55-83/58681.—चूं कि हरियाणा के राज्यवाल की राय है कि मैं विह्तार सन्ट्रल को प्रापरेटिव बैंक सिं हिसार के श्रीमक श्री बलवन्त सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि द्वरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करता बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम/%0/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं० 3864-प्:एस.ग्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बंनिधत नीचे लिखा मामला है ज्याय निर्णय हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

- क्या श्री बलवन्त सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?-

सं. श्रो.वि./एफ. डी./ 138-83/58687.—चूंजि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं० राधिका रवड़ श्रीडेक्टस, प्रा०लि०, प्लाट नं033, सैक्टर-6, फरीदाबाद के श्रमिक श्री राधा चरन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है ;

भीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इत्तलिए, भव, भौधोगिन निवाब मिध नियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रंधिनियम की धारा 7-क के ग्रंधीन ग्रौदोगिक भिक्करण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे निर्निदिष्ट निवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के मुख्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं ;-

क्या श्री राधा चरन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

सं भी- वि./एफ.डी./139-83/58694.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल राय है कि मैसर्च कास्ट मास्टर, सैक्टर 6, प्लाट • 46, फरीवाबाद के श्रीमक श्री दशरथ साद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में ' कीई ग्रीभोगिक विवाद है;

क्षीर चूंकि राज्यपाम इरियाणा इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना बाछनीय समझते हैं:

इसलिए, ग्रव, श्रीद्योगिक निवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7-क के अधीन श्रीद्योगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या इससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री दशरथ प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नही, तो वह किसं राहतं का हुकदार है ?

सं. श्रो.वि./भिवानी/73-83/58701.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि उप-मण्डल ग्रधिकारी, जन-स्वास्थ्य विभाग, नरवाना, के श्रमिक श्री फूल चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य उसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं 🕏

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिन्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिष्ठिसूचना सं० 9641—1—श्रम/2/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिष्ठिसूचना सं० 3864—ए.एस.श्रो. (ई) श्रम—70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिष्ठिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री फूल चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो.वि./एफ.डी./11/255/58715.—चूं कि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज को जनदीन ठेनेदार मार्फत जानको फ़ैबरीनेटरज्ञ, 19, इण्डस्ट्रीयल एरिया, एन. प्राई. टो., करीदाबाद (१) बामको फैबरीनेटरज्ञ, 19, इण्डस्ट्रीयल एरिया, एन.आई.टी., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री तुला राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणार्धिके राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछमीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवितियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई प्रक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रीवित्यम की धारा 7-क के श्रधीन श्रौद्योगिक श्रविकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, की नीचे निर्दिष्ट विश्वादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित भामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :--

क्या श्री तुला राम की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्तार है ?

सं. क्रो. वि./सोनीपत/169-83/58723.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मै० एस० के० इण्टरनैशनल, एम० 4, इण्डस्ट्रियल ऐरिया, सोनीपत, के श्रमिक श्री राम सुहावन तथा उसके प्रवत्थकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई औद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिश्वित्यम 1947, की घारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी सिंधसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनौंक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रीधसूचना सं. 3864-ए. एस. ग्रो. (ई)-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला नमार्यीनर्णय हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री राम सुर्वित की से बाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?